Since March 2002
A National, Registered, Peer Reviewed & Refereed Monthly Journal
Sociology
Research Link - 174, Vol - XVII (7), September - 2018, Page No. 43-44
ISSN - 0973-1628 ■ RNI - MPHIN-2002-7041 ■ Impact Factor - 2015 - 2.782

वाल्मीकि जाति की महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति : एक अध्ययन (छिन्दवाड़ा नगर के विशेष संदर्भ में)

प्रस्तुत शोधपत्र में वाल्मीकि जाति की महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन छिन्दवाड़ा नगर के विशेष संदर्भ में किया गया है। महिला विकास की दिशा में भारत के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विचार करने की शुरुआत 1970 से 1980 के दशक के बीच हुई। क्रमानुसार वर्ष 1975 को अंतर्राष्ट्रीय महिला वर्ष घोषित किया गया। अशिक्षा के कारण ही महिलाएँ सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं तथा अपने अधिकारों को समझने में असमर्थ होती हैं। वर्तमान समय में शिक्षा के प्रसार के चलते समाज में पर्दाप्रथा के प्रचलन में काफी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। वाल्मीकि समाज में महिलाएँ शिक्षा के प्रति जागरुक हो रही हैं। साथ ही परिवार के मुखिया अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलवाने के प्रति सकारात्मक सोच रख रहे हैं। समाज में आंशिक रुप से लड़कियों को शिक्षा व नौकरी के प्रति नकारात्मकता दिखाई देती है। कुँजी शब्द : महिला शिक्षा, महिला अधिकार।

डॉ.(श्रीमती) सुनीता कटारिया* एवं प्रताप सिंह गोदरे**

शिक्षा से अभिप्राय :

अल्तेकर के अनुसार, शिक्षा प्रकाश व शक्ति का ऐसा स्त्रोत मानी जाती थी, जो हमारे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों के प्रगतिशील और सुसंगत विकास द्वारा हमारी प्रकृति को ही बदल देती है तथा उसे और उदात्त बनाती है।

प्राचीन शिक्षा विद्यार्थियों में आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, आत्मसंयम और विवेक जैसे गुणों का विकास करती थी। सादा भोजन, सादा तपस्वी जीवन एवं ब्रह्मचर्य अध्ययन करके उसके व्यक्तित्व का विकास होता था, वाद–विवाद करना, तर्क–वितर्क विधि, दर्शन आदि का अध्ययन करना व विभिन्न विचारधाराओं का अध्ययन करना भी उसके व्यक्तित्व के विकास के अंग थे।

पूर्व में किये गये शोध :

चंदेल, अमिता ने इंदौर जिले में निवासरत वाल्मिकी जाति का अध्ययन करके यह पाया की पुरुषों की तुलना में महिला निरक्षरों की संख्या अधिक है। पुरुषों में यह प्रतिशत 4.09 जबकि महिलाओं में 9.09 प्रतिशत था। प्राथमिक स्तर पर महिलाओं का शैक्षणिक स्तर 34.55 माध्यमिक स्तर 14.55 हाईस्कूल व हायर सेकेण्डरी में 23.67 प्रतिशत स्नातक स्तर पर 12.73 प्रतिशत है। आकलन से स्पष्ट होता है कि वाल्मिकी समाज की महिलाओं का शैक्षणिक स्तर संतोषजनक नहीं है।

शोध उपकल्पना :

छिन्दवाड़ा नगर में वाल्मीकि जाति की महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति संतोषजनक होगी।

शोध के उद्देश्य :

(1) वाल्मीकि जाति महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति को ज्ञात करना।

(2) महिलाओं के शिक्षा न ग्रहण करने के कारणों का पता लगाना।

(3) वाल्मीकि जाति की महिलाओं में शिक्षा के प्रति जागरूकता का विकास करना।

अध्ययन क्षेत्र व विधि :

छिन्दवाड़ा नगर के 48 वार्डों में निवासरत वाल्मीकि जाति के परिवारों में 300 महिलाओं से साक्षात्कार, अनुसूची व अवलोकन के माध्यम से महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति से संबंधित तथ्यों का संकलन किया गया है।

तालिका क्र. 1 : महिलाओं का शैक्षणिक स्तर

क्र	महिलाओं की शिक्षा	संख्या	प्रतिशत
1	निरक्षर	00	00
2	प्राथमिक	60	20.00
3	माध्यमिक	69	23.00
4	हाईस्कूल	57	19.00
5	हायर सेकेण्डरी	46	15.30
6	स्नातक	44	14.70
7	स्नातकोत्तर	22	07.30
8	तकनीकी	02	00.70
	योग	**300**	**100.00**

**प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (समाजशास्त्र विभाग), गीतांजली शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश)*
***शोधार्थी (समाजशास्त्र विभाग), बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (मध्यप्रदेश)*

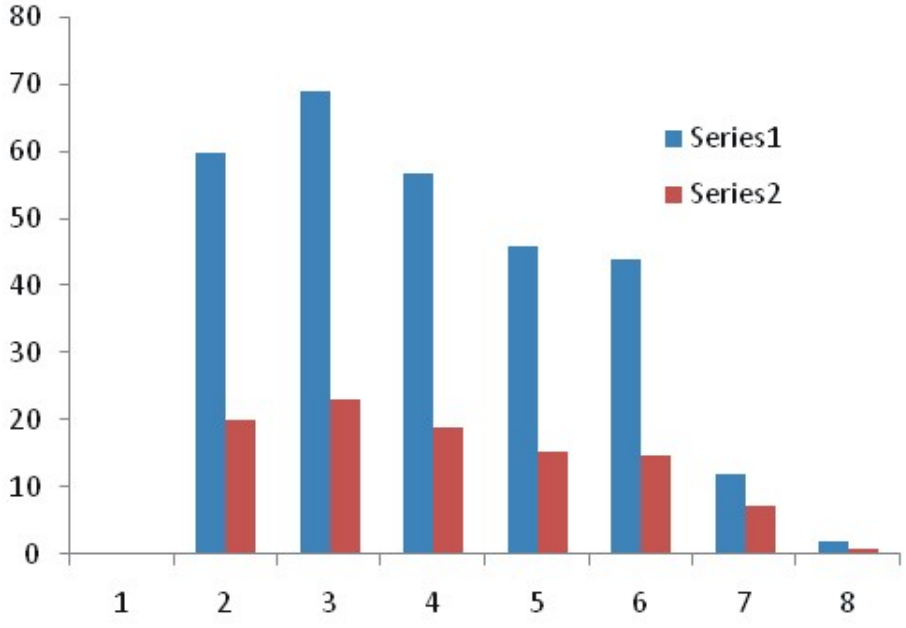

विश्लेषण :

छिन्दवाड़ा नगर के वाल्मीकि परिवार में महिलाओं की शिक्षा से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण तालिका क्र. 1 के आधार पर किया गया है।

(1) निरक्षर : वाल्मीकि परिवार की महिलाएँ निरक्षर नहीं है।

(2) प्राथमिक शिक्षा : वाल्मीकि परिवार की 60 (20 प्रतिशत) महिलाओं ने प्राथमिक शिक्षा अर्जित की है।

(3) माध्यमिक शिक्षा : वाल्मीकि परिवार की 69 (23 प्रतिशत) महिलाओं ने माध्यमिक शिक्षा अर्जित की है।

(4) हाईस्कूल : वाल्मीकि परिवार की 57 (19 प्रतिशत) महिलाओं ने हाईस्कूल शिक्षा अर्जित की है।

(5) हायर सेकेण्डरी : वाल्मीकि परिवार की 46 (15.3 प्रतिशत) महिलाओं ने हायर सेकेण्डरी शिक्षा अर्जित की है।

(6) स्नातक : वाल्मीकि परिवार की 44 (14.7 प्रतिशत) महिलाओं ने स्नातक शिक्षा अर्जित की है।

(7) स्नातकोत्तर : वाल्मीकि परिवार की 22 (7.3 प्रतिशत) महिलाओं ने स्नातकोत्तर शिक्षा अर्जित की है।

(8) तकनीकी शिक्षा : वाल्मीकि परिवार की 2 (0.7 प्रतिशत) महिलाओं ने तकनीकी शिक्षा अर्जित की है।

तालिका क्र. 1 के आधार पर ज्ञात होता है कि वाल्मीकि परिवार में महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति संतोषजनक नहीं है। उन्हें शिक्षा के प्रति जागरूकता की आवश्यकता है।

छिन्दवाड़ा नगर में निवासरत् वाल्मीकि जाति की 300 महिलाओं के साक्षात्कार, अनुसूची एवं अवलोकन पद्धति के माध्यम से संबंधित तथ्यों का आंकलन कर यह पाया गया कि आर्थिक अभाव और शिक्षा के प्रति जागरूकता में कमी यह मुख्य कारण है, जो कि महिलाओं की शिक्षा में बाधा है, क्योंकि 90 प्रतिशत महिलाएँ स्वयं व अपने परिवार प्रमुख की छोटी–छोटी नौंकरियों पर आश्रित है तथा आर्थिक संकट के कारण जीवन–यापन के अतिरिक्त उच्च शिक्षा प्राप्त करना इनके लिए संभव नही हो पाता है।

सुझाव :

(1) महिलाओं को अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार करना चाहिए।

(2) महिलाओं को शिक्षा के प्रति जागरूक होना चाहिए।

(3) महिलाओं को शासन द्वारा दी जा रही योजनाओं की जानकारी एवं लाभ लेना चाहिए।

(4) महिलाओं को अपने तथा परिवार के सदस्यों को शिक्षा के लिए प्रेरित करना चाहिए।

(5) महिलाओं को अपने संवैधानिक अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति जागरुक होना चाहिए।

निष्कर्ष :

वाल्मीकि परिवार की महिलाएँ शिक्षा के प्रति जागरूक नहीं हैं और उनकी शैक्षणिक स्थिति भी संतोषजनक नहीं है। महिलाओं को शिक्षा के प्रति जागरूक होना नितांत आवश्यक है, तभी वे अपने तथा परिवार के उज्ज्वल भविष्य की कामना कर सकती हैं। वाल्मीकि परिवारों में महिलाओं निरक्षर नहीं है, यह बात अच्छी है, परंतु उन्हें अपने शिक्षा का स्तर उठाना होगा।

छिन्दवाड़ा नगर में वाल्मीकि जाति महिलाओं की शिक्षा से संबंधित तथ्य विश्लेषण के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचाते हैं कि समाज में शिक्षा की स्थिति संतोषजनक नही है। शिक्षा के प्रति जागरूकता का आभाव है। कुछ शिक्षित उत्तरदाताओं की संख्या अपेक्षाकृत कम है। व्यक्ति की प्रस्थिति व सकारात्मक गतिशीलता में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा प्राप्त व्यक्ति को रोजगार, व्यवसाय एवं सम्मानजनक नौकरी प्राप्त होती है, जिसमें उनकी आर्थिक स्थिति सकारात्मक रूप से प्रभावित होती है। वाल्मीकि समाज अब धीरे–धीरे शिक्षा के महत्व को समझ रहे हैं तथा अपनी संतानों को शिक्षित कर रहे हैं।

सन्दर्भ :

(1) अग्रवाल, जे.पी. (2003) : भारत में नारी शिक्षा, प्रकाशक विद्या विहार, नई दिल्ली।

***(2)** आहुजा राम (1993) : इंडियन सोशल सिस्टम, रावत पब्लिशन, जयपुर।*

***(3)** चन्देल, अमिता (2015) : वाल्मीकि समाज की प्रस्थिति एवं गतिशीलता एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, इन्दौर।*

***(4)** नरवाले, वीरचंद (2017) : समय के स्वर, मासिक पत्रिका इंदौर।*

❁❁